



ISSN: 3049-2017

IJMH 2026; 3(5): 110-112

© 2026 IJMH

www.themultijournal.com

Received: 18-09-2026

Accepted: 09-10-2026

Publish : 10-10-2026

डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदी

अध्यापक, संस्कृत

उच्च माध्यमिक विद्यालय बसन्तपुर,

जिला—सिवान, बिहार

संस्कृत नीति-साहित्य की शैक्षिक दृष्टि का समकालीन पुनर्पाठ

डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदीDOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23447688>

सारांश

संस्कृत नीति-साहित्य में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन न मानकर व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास की समन्वित प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, चाणक्यनीति तथा नीतिशतक आदि ग्रन्थों में विद्या को विनय, विवेक, आत्मनियमन, शील और लोकमंगल से सम्बद्ध किया गया है। इन ग्रन्थों की कथा, संवाद तथा नीतिसूक्ति-प्रधान शिक्षण-पद्धति ज्ञान को जीवनानुभव से जोड़ती है। वर्तमान सूचना-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में नीति-साहित्य का पुनर्पाठ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि वह शिक्षा को सूचना-संचय से आगे ले जाकर विवेकपूर्ण निर्णय, नैतिक स्वायत्तता और सामाजिक उत्तरदायित्व से सम्बद्ध करता है। प्रस्तुत अध्ययन नीति-साहित्य में अन्तर्निहित शैक्षिक दृष्टि का विश्लेषण करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता-प्रधान समकालीन परिवेश के संदर्भ में उसकी पुनर्व्याख्या करता है और एक समन्वित समकालीन शैक्षिक प्रतिमान प्रस्तावित करता है।

बीजशब्द: संस्कृत नीति-साहित्य, शिक्षा, विद्या, विवेक, आत्मनियमन, शील, सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकमंगल।

Abstract

Sanskrit Nīti literature views education not merely as the acquisition of knowledge but as an integrated process of intellectual, ethical and social development. Texts such as the Pañcatantra, Hitopadeśa, Cāṇakyanīti and Nītiśataka associate learning with humility, discrimination, self-regulation, character and social welfare. Their story-, dialogue- and maxim-based pedagogy connects knowledge with lived experience. In the contemporary age of information technology and artificial intelligence, a re-reading of Nīti literature is significant because it moves education beyond information accumulation towards reflective judgment, ethical autonomy and social responsibility. This study analyses the educational vision embedded in Sanskrit Nīti literature, reinterprets it in relation to the National Education Policy 2020 and the contemporary AI-driven environment, and proposes an integrated educational model for the present age.

Keywords: Sanskrit Nīti Literature, Education, Knowledge, Discrimination, Self-Regulation, Character, Social Responsibility, Social Welfare.

1. भूमिका

शिक्षा की सार्थकता का प्रश्न केवल इस बात से निर्धारित नहीं होता कि विद्यार्थी ने कितना ज्ञान अर्जित किया, बल्कि इससे निर्धारित होता है कि अर्जित ज्ञान उसके विचार, आचरण और सामाजिक व्यवहार को किस सीमा तक परिष्कृत करता है। आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में सूचना के स्रोत अत्यन्त विस्तृत हो गए हैं; किन्तु सूचना की उपलब्धता अपने आप में विवेक, नैतिकता अथवा उत्तरदायित्व की गारंटी नहीं है। यही वह बिन्दु है जहाँ संस्कृत के नीति-साहित्य का पुनर्पाठ समकालीन शैक्षिक विमर्श के लिए महत्वपूर्ण हो उठता है।

“सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” [1]

2. नीति-साहित्य का शैक्षिक स्वरूप

संस्कृत नीति-साहित्य का उद्देश्य केवल आचार-संहिताएँ प्रस्तुत करना नहीं है। इसके भीतर व्यक्ति को जीवन की जटिल परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने योग्य बनाने की व्यावहारिक आकांक्षा विद्यमान

Correspondence:**डॉ० विष्वक्सेन दत्त द्विवेदी**

अध्यापक, संस्कृत

उच्च माध्यमिक विद्यालय बसन्तपुर,

जिला—सिवान, बिहार

है। पञ्चतन्त्र और हितोपदेश की कथा-परम्परा, चाणक्यनीति की सूक्तिपरकता तथा नीतिशतक की दार्शनिक-नैतिक दृष्टि इसी व्यापक उद्देश्य के विभिन्न रूप हैं।

‘सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।

अहार्यत्वादनर्घत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा॥” [2]

3. विद्या से विनय और पात्रता तक

नीति-साहित्य में विद्या का पहला नैतिक परिणाम विनय माना गया है। आधुनिक शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन केवल अंक, उपाधि अथवा कौशल से न होकर इस आधार पर भी होना चाहिए कि शिक्षार्थी अपने ज्ञान का उपयोग किस नैतिक विवेक के साथ करता है। विनय को हीनता नहीं, बल्कि बौद्धिक openness और सीखते रहने की क्षमता के रूप में पुनर्परिभाषित किया जा सकता है।

‘विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥” [3]

4. विवेक : ज्ञान की वास्तविक कसौटी

नीति-साहित्य में ज्ञान का मूल्य उसके विवेकपूर्ण प्रयोग से निर्धारित होता है। केवल जानकारी का संचय व्यक्ति को नीतिज्ञ नहीं बनाता। आधुनिक संदर्भ में शिक्षा का अगला चरण सूचना से विवेक की ओर संक्रमण है। विद्यार्थी को तथ्य की विश्वसनीयता जाँचने, स्रोतों की तुलना करने, तर्क और कुतर्क में भेद करने तथा निर्णय के परिणामों का आकलन करने की क्षमता देनी होगी।

‘थौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।

एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥” [4]

5. कथा, संवाद और अनुभव : नीति-शिक्षण की पद्धति

नीति-साहित्य की एक विशिष्ट विशेषता उसकी शिक्षण-पद्धति है। वह बालक को सीधे उपदेशों की दीवार के सामने खड़ा नहीं करता, बल्कि कथा के माध्यम से उसे निर्णय की परिस्थिति में प्रवेश कराता है। समकालीन कक्षा में इन कथाओं को case-study, role-play, group discussion और ethical dilemma के रूप में पुनर्गठित किया जा सकता है।

‘यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्।

कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते॥” [5]

‘मित्रलाभः सुहृद्भेदो विग्रहः सन्धिरेव च।

पञ्चतन्त्रात्तथान्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते॥” [6]

6. गुरु— शिष्य सम्बन्ध : आज्ञा से संवाद तक

भारतीय शिक्षा-दृष्टि में गुरु केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि ज्ञान की दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक है। ‘परिप्रश्न’ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। समकालीन शिक्षा में इसका पुनर्पाठ गुरु की भूमिका को व्याख्याता से facilitator में रूपान्तरित करता है। शिक्षक का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि प्रश्न की गुणवत्ता, स्रोत की विश्वसनीयता और विचार की दिशा विकसित करना है।

‘तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥” [7]

7. स्वाध्याय और आत्मनियमन : शिक्षा का आन्तरिक आयाम

शिक्षा यदि केवल बाहरी निर्देशों पर निर्भर रहे तो उसका प्रभाव सीमित रहता है। स्वाध्याय विद्यार्थी को निरन्तर आत्म-अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। डिजिटल परिवेश में संसाधनों की बहुलता के साथ आत्मनियमन की आवश्यकता भी बढ़ती है। शिक्षा का लक्ष्य ऐसी आन्तरिक क्षमता का निर्माण होना चाहिए जिससे विद्यार्थी स्वयं अपने समय, ध्यान, इच्छाओं और तकनीकी संसाधनों का विवेकपूर्ण नियमन कर सके।

‘आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहम् एव च॥” [8]

8. शील और चरित्र : शिक्षा की अन्तिम परीक्षा

विद्या और विवेक का मूल्य अन्ततः आचरण में दिखाई देता है। समकालीन पुनर्पाठ में ‘चरित्र’ को केवल व्यक्तिगत सदाचार तक सीमित रखना उचित नहीं होगा। शैक्षणिक ईमानदारी, plagiarism से बचाव, डिजिटल सामग्री के जिम्मेदार उपयोग, बौद्धिक संपदा का सम्मान, तथ्य-जाँच और AI-generated सामग्री के विवेकपूर्ण प्रयोग—ये सभी आधुनिक शैक्षणिक चरित्र के अंग हैं।

9. परोपकार से लोकसंग्रह तक : शिक्षा का सामाजिक विस्तार

नीति-साहित्य व्यक्ति को केवल अपने हित तक सीमित नहीं रखता। परोपकार को सज्जनता की पहचान माना गया है। भगवद्गीता इस व्यक्तिगत परोपकार को व्यापक सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में लोकसंग्रह से जोड़ती है। समकालीन शिक्षा में इसका अर्थ है कि ज्ञान और कौशल का उपयोग केवल व्यक्तिगत रोजगार अथवा प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान, सामुदायिक सहयोग और सार्वजनिक हित के लिए भी किया जाए।

‘पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।

नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः

परोपकाराय सतां विभूतयः॥” [10]

‘कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।

लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन् कर्तुमर्हसि॥” [11]

10. मूल्य-शिक्षा : उपदेश से जीवन-परिस्थिति तक

समकालीन मूल्य-शिक्षा की एक प्रमुख समस्या यह है कि मूल्य प्रायः पाठ्यक्रम की पृथक इकाई बनकर रह जाते हैं। नीति-साहित्य का दृष्टिकोण इससे भिन्न है। वहाँ मूल्य कथा, परिस्थिति, निर्णय और परिणाम के माध्यम से अन्तर्निहित होते हैं। मूल्य-शिक्षा को परिस्थिति → प्रश्न → विकल्प → निर्णय → परिणाम → आत्मचिन्तन की प्रक्रिया में पुनर्गठित किया जा सकता है।

11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में पुनर्पाठ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को समग्र विकास, आलोचनात्मक चिन्तन, अनुभवपरक अधिगम, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा से जोड़ने की दिशा में बल देती है। नीति-साहित्य की दृष्टि और इस समकालीन दिशा के बीच

विद्या/ज्ञान, विनय/learning openness, विवेक/critical thinking, कथा/experiential learning, स्वाध्याय/lifelong learning, आत्मनियमन/self-regulation, शील/ethical conduct तथा लोकसंग्रह/social engagement जैसे संवाद-बिन्दु दिखाई देते हैं।

12. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में नीति-साहित्य

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के स्वरूप को बदलना आरम्भ कर दिया है। विद्यार्थी सूचना खोजने, भाषा-प्रसंस्करण, लेखन, अनुवाद और विश्लेषण के लिए AI का उपयोग कर सकता है। इससे ज्ञान तक पहुँच सरल हुई है, पर एक नई चुनौती भी है—क्या विद्यार्थी स्वयं सोच रहा है अथवा केवल उपलब्ध उत्तर को स्वीकार कर रहा है? AI के संदर्भ में नीति-आधारित शिक्षा को स्रोत-विश्वसनीयता, स्वतंत्र सत्यापन, समझपूर्वक स्वीकार और नैतिक उपयोग के प्रश्नों पर केन्द्रित होना चाहिए। शिक्षक की भूमिका उत्तर देने से अधिक उत्तर की परीक्षा करना सिखाने की हो जाती है।

13. समकालीन शिक्षा के लिए नीति-आधारित शैक्षिक प्रतिमान

संस्कृत नीति-साहित्य से एक समकालीन शैक्षिक प्रतिमान निर्मित किया जा सकता है—विद्या (Knowledge), विनय (Intellectual Humility), विवेक (Reflective Judgment), आत्मनियमन (Self-Regulation), शील (Ethical Integrity), सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility) और लोकमंगल (Social Welfare)। इसे सूत्र रूप में—विद्या → विनय → विवेक → आत्मनियमन → शील → सामाजिक उत्तरदायित्व → लोकमंगल—अभिव्यक्त किया जा सकता है।

14. निष्कर्ष

संस्कृत नीति-साहित्य की शैक्षिक दृष्टि का महत्व इस तथ्य में नहीं है कि वह प्राचीन है, बल्कि इस तथ्य में है कि उसमें शिक्षा को मनुष्य के समग्र रूपान्तरण से जोड़ा गया है। समकालीन शिक्षा के समक्ष आज सूचना की कमी नहीं, बल्कि सूचना के चयन, सत्यापन, विवेकपूर्ण प्रयोग और नैतिक दिशा की चुनौती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस चुनौती को और तीव्र कर रही है। इसलिए नीति-साहित्य का पुनर्पाठ शिक्षा को अतीत की ओर लौटाने के लिए नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा को अधिक विवेकपूर्ण, नैतिक और मानवीय बनाने के लिए किया जाना चाहिए।

फुटनोट

1. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, एकादश अनुवाक।
2. नारायणपण्डितकृत हितोपदेश, प्रस्तावना, श्लोक 4।
3. नारायणपण्डितकृत हितोपदेश, प्रस्तावना, श्लोक 6।
4. नारायणपण्डितकृत हितोपदेश, प्रस्तावना, श्लोक 11।
5. नारायणपण्डितकृत हितोपदेश, प्रस्तावना, श्लोक 8।
6. नारायणपण्डितकृत हितोपदेश, प्रस्तावना, श्लोक 9।
7. श्रीमद्भगवद्गीता, 4.34।

8. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, एकादश अनुवाक।

9. कठोपनिषद्, 1.3.3।

10. सुभाषितरत्नभाण्डागार, सज्जनप्रशंसा, 51.170।

11. श्रीमद्भगवद्गीता, 3.20।

12. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली, 2020।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. नारायणपण्डित, हितोपदेश
2. विष्णुशर्मा, पञ्चतन्त्रम्
3. कौटिल्य, चाणक्यनीति
4. भर्तृहरि, नीतिशतकम्
5. तैत्तिरीयोपनिषद्
6. कठोपनिषद्
7. श्रीमद्भगवद्गीता
8. सुभाषितरत्नभाण्डागार, सज्जनप्रशंसा-प्रकरण
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली, 2020।
10. Kane, P. V. History of Dharmaśāstra. Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
11. Radhakrishnan, S. Indian Philosophy. George Allen & Unwin, London.
12. Mookerji, R. K. Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist. Motilal Banarsidass, Delhi.